

23-24 Oct 2021

नया परिदृश्य: लैंगिक असमानता के प्रति ग्रामीण महिलाओं के अभिवृत्ति परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

रीता कुमारी, अनुसंधान छात्र, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ (झारखंड)

सारांश

लैंगिक समानता सामाजिक विकास, मानवीय गरिमा और समावेशी समाज की आधारभूत आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर परंपरागत मान्यताओं, सीमित संसाधनों, अशिक्षा तथा अवसरों की असमान उपलब्धता का प्रभाव देखा जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य लैंगिक असमानता के प्रति ग्रामीण महिलाओं की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना है। शिक्षा महिलाओं को केवल साक्षर बनाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनके अधिकारों, सामाजिक उत्तरदायित्वों, स्वास्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता तथा निर्णय लेने की क्षमता के प्रति जागरूकता विकसित करने में भी सहायक हो सकती है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा का स्तर, शैक्षिक अनुभव और निरंतर सीखने के अवसर ग्रामीण महिलाओं की लैंगिक भूमिकाओं एवं समानता संबंधी धारणाओं को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ रूढ़िगत सामाजिक धारणाओं पर प्रश्न उठाने, अपने विचार व्यक्त करने तथा परिवार और समुदाय से संबंधित निर्णयों में सक्रिय भागीदारी के लिए अधिक सक्षम हो सकती हैं। साथ ही, व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल साक्षरता और कौशल विकास महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों का विस्तार कर सकते हैं। हालांकि, सामाजिक रूढ़ियाँ, गरीबी, संसाधनों की कमी, डिजिटल विभाजन तथा शिक्षा तक असमान पहुँच जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा के साथ सामाजिक जागरूकता और सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षा ग्रामीण महिलाओं में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति और व्यापक सामाजिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान कर सकती है।

मुख्य शब्द: लैंगिक असमानता, ग्रामीण महिलाएँ, शिक्षा, अभिवृत्ति परिवर्तन, महिला सशक्तीकरण, लैंगिक समानता, सामाजिक जागरूकता, डिजिटल साक्षरता